तिजारत का जाएज़ तरीक़ा

आला हज़रत इमाम-ए-अहले सुन्नत
इमाम अहमद रज़ा
रदियल्लाहो तआला अन्हो

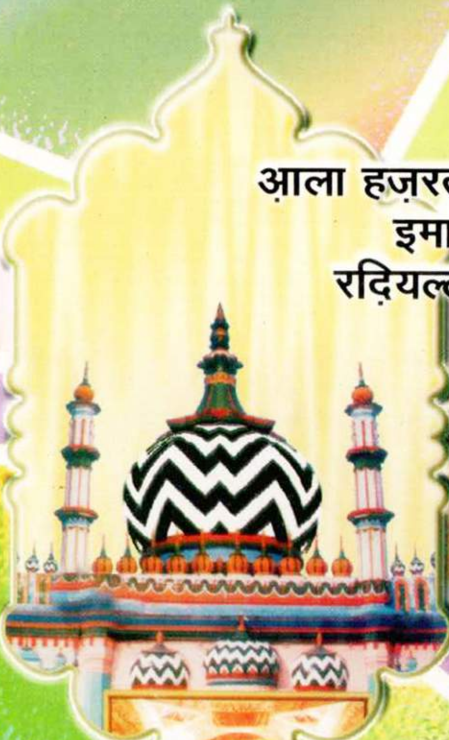

रज़ा एकेडमी मुंबई-3

तारीख़ी नाम - ख़ैरुल आमाल

तिजारत का जाएज़ तरीक़ा

तसनीफ़े लतीफ़

अअ्ला हज़रत इमाम अहले सुन्नत मुजद्दिदे दीन-ो मिल्लत

मौलाना शाह अहमद रज़ा क़ादिरी رضی اللہ عنہ

बफ़ैज़

हुज़ूर मुफ़्तिए अअ्ज़म हज़रत अल्लामा शाह

मुहम्मद मुस्तफ़ा रज़ा क़ादिरी नूरी

हिन्दी कर्ता

मुहम्मद शमीम अंजुम नूरी (बी.ए.)

रज़ा एकेडमी २६, कांबेकर स्ट्रीट, मुंबई-३. फ़ोन: ३७० २२९६

सिलसिलए इशाअत नम्बर २२२

सने इशाअत १४१९ हिजरी

तबाअत : रज़ा ऑफ़सेट,

१२३, एम. ई. सारंग मार्ग मुंबई - ३

फ़ोन : ३७१ २३१३

७८६ / ९२

पेशे लफ़्ज़

सय्येदुना सरकारे अअ्ला हज़रत इमाम अह्ले सुन्नत मौलाना शाह अहमद रज़ा क़ादिरी बरकाती ﷺ ने अपनी ६८ साला उम्र शरीफ़ में इल्म–ो फ़न का जो बेश बहा सरमाया हम अह्ले सुन्नत को बख़्शा है उस पर जिस क़दर भी नाज–ो इफ़्तिख़ार किया जाए कम है।

दौरे हाज़िर की ये एक अहम जरूरत और माँग है कि सरकारे अअ्ला हज़रत फ़ाज़िले बरेलवी के तसनीफ़ात को उर्दू के साथ साथ हिन्दी में भी शाएअ किया जाए ताकि ग़ैर उर्दू दाँ तबक़ा भी अअ्ला हज़रत फ़ाज़िले बरेलवी की तसनीफ़ात से फ़ाएदा हासिल कर सके।

अल्हम्दु लिल्लाह, रज़ा एकेडमी ने कंज़ुल ईमान शरीफ़ को पहले उर्दू फिर अंग्रेजी और अभी हाल ही में हिन्दी रस्मुलख़त मे शाएअ करने का शरफ़ हासिल किया। अनवारुल बिशारह, जमाले मुहम्मद मुस्तफ़ा ﷺ, मज़ाराते औलिया पर रौशनी और शाने हुज़ूर ग़ौसे अअ्ज़म भी हिन्दी में शाएअ हुई। रज़ा एकेडमी के इस इक़दाम को हिन्दी दाँ तबक़ा में काफ़ी सराहा गया है और हाथों हाथ लिया गया।

जेरे नज़र रिसाला **"तिजारत का जाएज़ तरीक़ा"** भी सरकारे अअ्ला हज़रत फ़ाज़िले बरेलवी की एक मुदल्लल तस्नीफ़ है।

दुआ फ़रमाएँ कि रब तआला अपने हबीब ﷺ के सदक़े में हम अराकीने रज़ा एकेडमी को मस्लके अअ्ला हज़रत का सच्चा व पक्का ख़ादिम बनाए।

असीरे मुफ़्तिए अअ्ज़म

मुहम्मद सईद नूरी

बानी व जनरल सेक्रेटरी

रज़ा एकेडमी

६, रबीउल आख़िर १४१९ हिजरी

بسم الله الرحمن الرحيم

मस्अ्ला अज़ मुल्क बंगाला ज़िलअ पापना डाक खाना सोबगा़जा मौज़ूअ पर का़ज़ी पूर मुर्सिला मौलवी उमीद अली साहि़ब २७ जमादिल आख़िर १३१८ हिजरी.

क्या फ़रमाते हैं ओलमाए दीन इस मस्अ्ला में कि रूपया कमाना किस वक़्त फ़र्ज़ है किस वक़्त मुस्तह़ब किस वक़्त मकरूह किस वक़्त ह़राम और सवाल करना कब जाएज़ है और कब नाजाएज़।

अलजवाब

ये मस्अ्ला बहुत तवीलुल ज़ैल है जिस की तफ़्सील को दफ़्तर दरकार यहाँ उस के बअ्ज़ सूर–ो ज़वाबित गरआ पर इक्तिसार फ़ा कौल–ो बिल्लाहित्तौफ़िक कसब के लिए एक ही मबदा है यानी वो ज़रिआ जिस से माल ह़ासिल किया जाए और एक ग़ायत यानी वो ग़रज़ कि तह़सीले माल से मक़्सूद हो इन दोनों में ज़ातन ख़्वाह आरिज़न अह़काम न गाना फ़र्ज़, वाजिब, सुन्नत, मुस्तह़ब, मुबाह़, मकरूहे तन्ज़ीही, असाअ्त, मकरूहे तह़रीमी, ह़राम, सब जारी हैं और दोनों के एअ्तबार से कसब पर अह़काम मुख़्तलिफ़ा तारी हैं नफ़्से कसब बे लिहाज मुबादी व ग़ायात कोई हुक्म ख़ास नहीं रखता **ज़राएअ में ह़राम** जैसे ग़सब–ो रिश्वत सुरक़ा व रिया यू हैं ज़िना व गिना व हुक्मेखिलाफ़ मा अंन्ज़ल अल्लाह वगै़रा उमूरे मह़र्रमा की उजरत। तिलावते कुरआन व वअ्ज़–ो तज़्कीर व मीलाद ख़्वानी वगै़रहा इबादात बेचकर कीमत असीतरह जुमला उक़ूदे बातिला व फ़ासिदा

कतिईय्या। मकरूहे तहरीमी जैसे अजाने जुमअ के वक्त तिजारतः–

فی الدر المختار کرہ تحریما مع صحۃ البیع عند الاذان الاول قلت و عبر فی الھدایۃ بالحرمۃ واعترضہ الاتقانی بان البیع جائز لکنہ یکرہ کما صرح بہ فی شرح الطحطاوی لان المنع لغیرہ لا بعدم المشروعیۃ واشار فی الدر ان جوابہ بقولہ افاد فی البحر صحۃ اطلاق الحرمۃ علی المکروہ تحریما اھ وانا اقول الصحۃ اذا لم تناف المنع لغیرہ لم تناف الحرمۃ ایضا کذلک فان المنع ولو لغیرہ یشمل المنع ظنا فیکرہ وقطعا فیحرم ولاشک ان النھی ھٰھنا قطعی فلا ادری ما احوجھم الی تاویل الحرمۃ بالکراھۃ۔

इसी तरह दूसरा मुसलमान जब एक चीज़ ख़रीद रहा हो और क़ीमत फ़ैसल (तय) हो गई हो और गुफ़्तगू हुनूज़ क़तअ़ (ख़त्म) न हुई ऐसी हालत में क़ीमत बढ़ा कर ख़्वाह किसी तौर पर ख़ुद ख़रीद लेना :– فی الدر کرہ تحریما السوم علی سوم غیرہ ولو ذمیا مستامنا بعد الاتفاق علی مبلغ الثمن والا لا لانہ بیع من یزید اھ مختصرا۔

यू हैं तलफ़ी जलब व बैअ़उल हाज़िरुल मबादी व तफ़्रीकुल सग़ीर मिन महरमा वग़ैरहा कि मअ़ क़ैद–ो शर्त कुतुबे फ़िक़ह में मुफ़स्सल (तफ़सील से) हैं इसी क़िस्म में है या नेचरी वज़अ़ के कपड़े या जूते सीना या इन अशिया ख़्वाह ताँबे पीतल के ज़ेवरों वग़ैरहा का बेचना और जुमला उक़ूद–ो मकासिब ममनूआ़ :–

فی رد المحتار من الحظر عن المحیط بیع المکعب المفضض للرجل ان لیلبسہ یکرہ لانہ اعانۃ علی لبس الحرام وان کان اسکافا امرہ انسان ان یتخذ لہ خفا علی زی المجوس او الفسقۃ او خیاطا امرہ ان یتخذ لہ ثوبا علی زی الفساق یکرہ لہ ان یفعل لانہ سبب التشبہ بالمجوس والفسقۃ

असाअ़त यानी वो काम जिसे न मकरूहे तन्ज़ीही की तरह सिर्फ़

ख़िलाफ़े ऊला कहा जाए जिस पर मलामत भी नहीं न तहरीमी की तरह गुनाह व नाजाएज जिस पर इस्तहक़ाके अज़ाब है बल्कि यूँ कहा जाए कि बुरा किया क़ाबिले मलामत हुआ जिस का हासिल मकरूहे तन्ज़ीही से बढ़ कर है और तहरीमी से कमतर:–

كما نبه عليه العلامة الشامى فى رد المحتار اقول ولا بد منه فان كل مرتبه للطلب فى جانب الفعل فان بازائها مرتبة فى جانب الترك فالتحريم فى مقابلة الفرض فى الرتبة وكراهة التحريم فى رتبة الواجب والتنزيه فى رتبة المندوب كما فى رد المحتار من بحث اوقات الصلاة وقد بقيت السنة وهى فوق المندوب ودون الواجب فوجب ان يقابلها ما هو فوق كراهة التنزيه دون التحريم وهو الاساءة وقد نصوا عليها فى غير ما فرع وان اغفلها كثيرون فى ذكر الاقسام فليحفظ قال فى الدر ترك السنة لايوجب فسادا ولا سهوا بل اساءة لو عامدا غير مستخف الخ وفى رد المحتار عن التحرير تاركها اى السنه يستوجبه اساءة اى التضليل واللوم۔

मसलन अपने से अअ्लम (अपने से ज़्यादा जानने वाला) के होते हुए ओहदए क़ज़ा की नौकरी जबकि वो इस पर राज़ी हो :–

هو فى الدر المختار لو قدموا غير الاولى اساءوا بلا اثم فى رد المحتار عن التتارخانية اساؤا اذ تركوا السنة لكن لا يأثمون لانهم قدموا رجلا صالحا وكذا الحكم فى الامارة والحكومة اما الخلافة وهى الامامة الكبرىٰ فلا يجوز ان يتركوا الافضل وعليه اجماع الامة۔

अक़ौल :– यूँही ज़ुहर व मग़रिब व इशा के फ़र्ज़ पढ़ कर सुन्नतों से पहले बैअ–ो शरा और ज़ाहिरे तुलूअे फ़ज्र के बाद नमाज़े सुब्ह से पहले ख़रीद–ो फ़रोख़्त भी इसी तरह से है जबकि ज़रूरत दाई न हो यूँहीं हर वो कसब के ख़िलाफ़ सुन्नत या उस का शुग़ल तर्के सुन्नत की तरफ़ हो **मकरूहे तन्ज़ीही** जैसे बैअ

ऐनिया जिस के मंबअ बाएअ के पास औद न करे मसलन जो क़र्ज़ मांगने आया उसे रूपिया न दिया बल्कि दस की चीज़ पन्द्रह को उस के हाथ बेची कि उस ने दस को बाज़ार में बेच ली :–

فی الدر المختار شرا والشئ الیسیر بثمن غال لحاجۃ المقرض یجوز ویکرہ واقرہ المصنف وفی اخر الکفالۃ بیع العینۃ ای بیع العین بالربح نسئۃ لیبیعھا المستقرض باقل لیقضی دینہ اخترعہ اکلۃ الربا وھو مکروہ مذموم شرعا لما فیہ من الاعراض عن مبرۃ الاقراض وفی رد المحتار عن الفتح ان فعلت صورۃ یعود الی البائع جمیع ما اخرجہ او بعضہ یکرہ تحریما فان لم یعد کما اذا باعہ المدیون فی السوق فلا کراھۃ بل خلاف الاولی اھ ملخصا

मुबाह जैसे बन (जंगल) की लकड़ी जंगल के शिकार दरिया की मछलियाँ **मुस्तहब** जैसे ख़िदमते औलिया व ओलमा की नौकरी

وقد کان انس بن مالک رضی اللہ تعالی عنہ یخدم النبی صلی اللہ تعالی علیہ وسلم علی شبع بطنہ

यूँही हर वक़्त कसब जिस में उमूरे ख़ैर पर इआनत हो अगरचे ख़ैर सिर्फ़ तक़लीले शर व ज़ीर हो मसलन घाट या चुंगी या बन्दोबस्त की नौकरी इस निय्यत से कि बन्दगाने ख़ुदा कारकुनों के जबर व तुन्दी व ज़ुल्म–ो ज़्यादा सतानी से बचें :–

فی کفالۃ الدر النوائب ولو بغیر حق کجبایات زماننا قالوا من قام بتوزیعھا بالعدل اجر اھ ملخصا وفی شھادات رد المحتار قدمنا عن البزدوی ان القائم بتوزیع ھذہ النوائب السلطانیۃ والجبایات بالعدل بین المسلمین ماجور وان کان اصلہ ظلما الخ قلت وکذالک نص علیہ فی کفالۃ الھدایۃ وغیرھا

सुन्नत जैसे अहबाब का हदिया क़बूल करना और इवज़ देना

احمد والبخاري وابوداؤد والترمذی عن ام المؤمنين الصديقة رضی الله تعالیٰ عنها ان رسول الله صلی الله تعالیٰ عليه وسلم كان يقبل الهداية ويثبت عليها۔

और अफ्ज़ल–ो अअ़ला कसब मस्नून सुल्ताने इस्लाम के ज़ेरे निशान जिहादे शरई है।

احمد وابو يعلی والطبرانی فی الكبير بسند حسن عن ابن عمر رضی الله تعالیٰ عنهما عن النبی صلی الله تعالیٰ عليه وسلم بعثت بين يدی الجماعة بالسيف حتی يعبد والله تعالیٰ وحده لاشريك له وجعل رزقی تحت ظل رمحی الحديث واخرج ابن عدی عن ابی هريرة عن النبي صلی الله تعالیٰ عليه وسلم الزموا الجهاد تصحوا وتستغنوا الشيرازي فی الالقاب عن ابن عباس رضی الله تعالیٰ عنهما عن النبی صلی الله تعالیٰ عليه وسلم اطيب كسب المسلم سهمه فی سبيل الله قال المناوی فی التيسير لان ماحصل بسبب الحرص علی نصرة دين الله تعالیٰ لاشئ اطيب منه فهوافضل من البيع وغيره مما مر لانه كسب المصطفیٰ وحرفته صلی الله تعالیٰ عليه وسلم اه وفی صيد رد المحتار عن الملتقی ومواهب الرحمٰن فی تفاضل انواع الكسب افضله الجهاد ثم التجارة ثم الحراثة ثم الصناعة

वाजिब जैसे क़बूले अ़तिय–ए–वालिदैन जबकि न लेने में उन की ईज़ा मज़्नून हो और अगर तयक़्क़ुन (यक़ीन) हो तो फ़र्ज़ होगा कि ईज़ाए वालिदैन ह़राम क़तई है और ह़राम से बचना फ़र्ज़े क़तई इसी तरह़ ओहदए क़ज़ा का क़बूल फ़र्ज़ है जबकि उस के सिवा और कोई अहल न हो।

درالمختار كره تحريما التقلد ای اخذ القضاء لمن خاف الحيف ای الظلم او العجز وان تعين له اوامنه لايكره فتح ثم ان انحصر فرض عينا والا كفاية بحر والتقليد رخصة ای مباح والترك

عزيمة عند العامة بزازيه فالاولى عدمه ويحرم على غير الاهل الدخول فيه قطعا من غير ترجيح فى الحرمة قضية الاحكام الخمسة۔

ग़ायात में फ़र्ज़ जैसे ख़ुर्दो–नोश व पोशिश ब–क़द्र सद रमक़ व सित्रे औरत बल्कि इतना खाना जिस से नमाज़े फ़र्ज़ खड़े होकर हो सके और रमज़ान में रोज़े पर क़ुदरत मिले :–

فى الدر الاكل فرض مقدار مايدفع الهلاك ويمكن به من الصلاة قائما وصومه اھ ملخصا

यूँही किफ़ायत अहल–ो अेयाल व अदाए देवन व नुफ़्क़ात मफ़रूज़ा :–

فى خزانة المفتين الكسب فرض وهو بقدر الكفاية لنفسه و عياله وقضاء ديونه ونفقة من يجب عليه نفقته

यूँही हज फ़र्ज़ जबकि बादे फ़र्ज़ियत माल न रहा :–

لان الذمة قد شغلت وابراؤها عن الفرض فرض ومقدمة الفرض فرض

ज़ौजा अगरचे ग़नीय्या हो उस का कफ़न दफ़न शौहर पर है यूँही अक़ारिब का जबकि माल न छोड़ें बल्कि हर मुसलमान का कफ़न दफ़न मुसलमानों पर फ़र्ज़े किफ़ाया है जब एक शख़्स में मुन्हसिर हो जाए फ़र्ज़े अैन हो जाएगा :–

فى التنوير كفن من لامال له على من تجب عليه نفقته واختلف فى الزوج والفتوى على وجوب كفنها عليه وان تركت مالا الخ فى رد المحتار الواجب عليه تكفينها وتجهيزها الشرعيان من كفن السنة والكفاية حنوط واجرة غسل وحمل و دفن۔

वाजिब जैसे इतना खाना कि अदाए वाजिबात पर क़ादिर हो ज़ौजा का हक़ जिमाअ में अदा कर सके :–

وهذا بعد مرة من واجبات الديانة وان لم يجبر عليه قضاء كما فصلناه فى الطلاق من فتاوىنا

कपड़े में इतनी ज़ियादत कि इन्तिक़ालाते नमाज़ वग़ैरा में जानू न खुलें यूँही सदक़ए फ़ित्र वाजेहय्या जबकि बादे वुजूब माल न रहा ग़र्ज़ हर वाजिब जिस की तहसील को माल दरकार।

सुन्नत जैसे नमाज़ के लिए इमामा व जुब्बा व रिदा वग़ैरहा लिबास मस्नून व तजुम्मुले ईदैन व जुमअ व बिना व तौसीअ व ततबीबे मसाजिद व सिलए रहम हदिय–ए–अहबाब व मवासाते मसाकीन व ख़बर गीरी यतामा व बेवगान व ख़िदमते मेहमानान–ो इमसाल। यूँही इत्र व मिश्क व सुर्मा व शाना व आईना ब–क़सदे इत्तिबाअ और खाने में तिहाई पेट की मिक़्दार तक पहुँचना

मुस्तहब जैसे बिनाए सक़ाया व संबील व सिरा व मदारिस व पुल वग़ैरहा :– فی ردالمحتار عن تبیین المحارم عن بعض العلماء فی ذکر مراتب الاکل مندوب وھو ما یعینه علی تحصیل النوافل وتعلیم العلم وتعلمه

बल्कि मेहमान के साथ पूरा पेट भर खाना भी कि वो हाथ उठा लेने से शर्मा कर भूका न रहे यूँही औरत की सेर ख़ोरी इस निय्यत से कि शौहर के लिए हिफ़्ज़े जमाल करे कम ख़ोरी लाग़री व शिकस्त रंग–ो हुस्न की मौजिब न हो :–

فی الدر عن الوھبانیة وللزوجة التسمین لافوق شبعھا اھ قال الشامی قال الطرسوسی فی الزوجة ینبغی ان یندب لھا ذالك وتکون ماجورة قال الشارح ولا یعجبنی اطلاق اباحة ذالك فضلا عن ندبه ولعل ذالك محمول علی ما اذا کان الزوج یحب السمن والا ینبغی ان یکون موزورة اھ اقول فی الغرض کلام فان الاکل الی الشبع حلال بیضھم ونیة السمن غایتھا کراھة التنزیه نعم عدم الاجر ظاھر ثم ھذا کله فی التسمین اما ما ذکرت فواضح لاغبار علیه۔

मुबाह जैसे ज़ीनत–ो आराइश लिबास–ो मकान व ज़ेवरे ज़नाँ जबकि ये सब उमूर मुन्किरात व मक़ासिदे मज़मूमा से ख़ाली हों

वर्ना मज़मूम हैं और मक़ासिदे महमूदा के साथ भी ख़ाली मुबाह न रहेंगे मुस्तहब हो जाएँगे :– فان المباح اتبع شئ للنیات کماذکرہ فی البحرالرائق وردالمحتار وغیرھما وذالک لخلوہ فی نفسہ عن کل حکم فلا یزاھم شیئا یطرہ علیہ من صواحبہ کنیۃ اوتأدیۃ الی خیراوشر کما لایخفی۔

मकरूहे तन्ज़ीही जैसे अपने लिए अनवाओ फ़वाकि से तफ़क्कोह (فی الدر لا بأس بانواع الفواکہ وترکہ افضل) **इसाअ़त** जैसे इत्तबाओ शहवत नफ़स–ो लज़्ज़ते तबअ़ के लिए **तर्फ़ा** व तन्अम बिल ह़लाल में इन्हमाक इसी निय्यत से उ़म्दा खाने दोनों वक़्त सेर खाना बारीक नफ़ीस बेश बहा जामे पहना कर ता शबाना रोज़ औरतों की तरह कंघी चोटी में गिरफ़्तार रहना कि ये उमूर अगरचे ह़दे ह़रीम–ो गुनाह तक न पहुँचें खिलाफ़े सुन्नत ज़रूर हैं :–

ولاشک فی توجہ اللوم علیہ وان لم یستحق العقاب والاحادیث فی ذالک کثیرۃ شھیرۃ لانسردھا مخافۃ الاطناب **اقول** وبہ علم ان ماجنحت الیہ اولی مما فی ردالمحتار عن شرح الملتقی فی انواع الکسوۃ مباح وھو الثوب الجمیل للتزین فی الاعیاد والجمع ومجامع الناس لافی جمیع الاوقات لانہ صلف وخیلاء وربما یغیظ المحتاجین فالتحرز عنہ اولی ومکروہ وھو اللبس للتکبراھ وکذا ماذکر من محض الاباحہ فی تجمل الجمع والاعیاد والمجامع محلہ ماذا لم ینو الا التجمل اما اذا نوی الاتباع فسنۃ لاشک کما ذکرت وکذا الکراھۃ فی التکبر تحمل علی الحرمۃ فانہ حرام وکبیرۃ عظیمۃ قطعا

मकरूहे तह़रीमी जैसे मह़ज़ तकासुर व तफ़ाखुर के लिए जमअ़ अमवाल فی خزانۃ المفتین بعد مامر ومکروہ وھو لجمع للتفاخر والتکاثر وان کان من حل۔

यूँही पेट से ज़्यादा चन्द लुक़्मे खाना जिन का मेअ़दे में बिगड़ जाना मज़नून न हो :– فی الخانیۃ یکرہ الاکل فوق الشبع اھ

اقول وبھذا الحمل تندفع المخالفۃ بینہ وبین ما یأتی عن الدر من نص التحریم۔

मगर जब कि रोज़े की कुव्वत मक़्सूद हो या मेहमान का साथ देना

فی التنویر مباح الی الشبع لتزید قوتہ وحرام وھو ما فوقہ الا ان یقصد قوۃ صوم الغد اولئلا یستحیی ضیفہ اھ **اقول** والاستثناء اذا حمل علی ما ذکرت صح قطعا ویکون قولہ حرام یشمل المکروہ فلا یکون منقطعا فافھم۔

यूँही लिबासे शोहरत पहनना यानी इस क़दर चमकीला नादिर हो जिस पर उंगलियाँ उठें और बिलक़स्द इतना नाक़िस–ो ख़सीस करना भी ममनूअ है जिस पर निगाहें पड़ें यूँही हर अनोखी अचंभे की हैहाते वज़अ तराश ख़राश कि वजहे अंगुश्त नुमाई हो सुनन अबी दाऊद व सुनन इब्ने माजा में अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رضی اللہ عنہ से ब–सनदे ह़सन मरवी रसूलल्लाह صلی اللہ علیہ وسلم फ़रमाते हैं :–

من لبس ثوب شھرۃ البسہ اللہ یوم القیمۃ ثوبا مثلہ وعند ابن ماجۃ ثوب مذلۃ زاد ابوداود فی روایۃ ثم یلھب فیہ النار

जो शोहरत के कपड़े पहनेगा अल्लाह तआला उसे रोज़े क़ियामत वैसा ही लिबासे शोहरत पहनाएगा जिस से अ़र्साते मह़शर में मआज़ल्लाह ज़िल्लत–ो तफ़ज़ीह़ हो फिर उस में आग लगा कर भड़का दी जाएगी वलइयाज़ु बिल्लाहि तआ़ला :–

فی رد المحتار عن الدر المنتقی نھی عن الشھرتین وھو ما کان فی نھایۃ النفاسۃ او الخساسۃ اھ **اقول** ولا یختص بھما بل لو کان بینھما وکان علی ھیئۃ عجیبۃ غریبۃ توجب الشھرۃ وشخوص الابصار کان لباس شھرۃ قطعا

हराम जैसे रेशमी कपड़े मुग़रक़ टोपियाँ यूँही पेट से ऊपर इतना खाना जिस के बिगड़ जाने का ज़न्न ग़ालिब हो :–

فی الدر حرام فوق الشبع وھو اکل طعام غلب علی ظنہ

انہ افسد معدتہ وکذا فی الشرب قہستانی

जब ये सूरतें मालूम हो लें अब **अह़कामे कसब** की तरफ चलिए। ज़ाहिर है कि कसब यानी तह़सीले माल को ख़्वाह रूपिया हो या तआम (खाना) या लिबास या कोई शय सबब–ो गर्ज़ दोनों से नागुज़ीर है और अह़कामे नौगाना में पहले चार जानिब तलब हैं जिन में फ़र्ज़–ो वाजिब की तलब जाज़म है और सुन्नत–ो मुस्तह़ब की ग़ैर जाज़म और पिछले चार जानिब नही हैं जिन में मकरूहे तन्ज़ीही व असाअ़त से नही इर्शादी और तह़रीमी व ह़राम से ह़तमी और मुबाह़ तलब व नही दोनों से ख़ाली अब अगर सबब–ो गर्ज़ दोनों अक़सामे तस्आ से एक ही क़िस्म के हैं जब तो ज़ाहिर कि वही हुक्म कसब पर होगा मसलन ज़रिआ भी फ़र्ज़ और गर्ज़ भी फ़र्ज़ तो ऐसा कसब दोहरा फ़र्ज़ होगा और दोनों ह़राम तो दूना ह़राम व अ़ला हाज़ल क़ियास और अगर मुख़्तलिफ़ अक़्साम से हैं तो तीन ह़ाल से ख़ाली नहीं अव्वल इख़्तिलाफ़ जानिबे वाह़िद मसलन तलब या नही के अक़साम में हो जैसे सबब फ़र्ज़ हो ग़र्ज़ वाजिब या सबब मकरूहे तन्ज़ीही ग़र्ज़ ह़राम तीसरा इख़्तिलाफ़, इख़्तिलाफ़े जानिबे वस्त हो मसलन सबब वाजिब या ह़राम और ग़र्ज़ मुबाह़ या बिलअ़क्स इन दोनों सूरतों में कसब अशद–ो अक़वा का ताबेअ़ होगा मसलन फ़र्ज़ व वुजूब व सुन्नीयत का तो वाजिब और एक मुबाह़ और दूसरा और किसी क़िस्म का है तो कसब उसी क़िस्म का होगा :–

لما مر من ان المباح ساذج عار یکتسی بکل رداء ویتلون بلون کل ما یمازج والضعیف من جانب یندرج فی القوی منہ ثالثا۔

चौथा इख़्तिलाफ़, इख़्तिलाफ़े जानिबीन हो यानी सबब जानिबे तलब में है और ग़र्ज़ जानिबे नहीं या बिलअक्स सूरते ऊला में कसब मुत्लक़न हुक्म ग़र्ज़ का मोरिद रहेगा मसलन ग़र्ज़ ह़राम

है तो हुर्मत–ो गुनाह नक्दे वक़्त है गो सबब फ़र्ज़ वाजिब हो हत्ता कि अगर सबबे अअ्ला दर्ज–ए–तलब में हो यानी फर्ज और गर्ज़ अदना दर्ज–ए–नहीं यानी मकरूहे तन्ज़ीही जब भी कसब मकरूहे तन्ज़ीही से ख़ाली नहीं हो सकता अगरचे सबब फ़ी नफ़सिही फ़र्ज़ है वजह ये कि कोई गर्ज़ मुइय्यने कसब के लिए लाज़िम नहीं वो इख़्तिलाफ़े निय्यत से मुख़्तलिफ़ हो सकती है और हर वक़्त अपने इख़्तियार से इमकान तबद्दुल रखती है। माना कि सबब फ़र्ज़ था मगर जब उस ने उसे किसी अम्रे हराम या ना पसन्दीदा की निय्यत से किया ज़रूर हुर्मत–ो नापसंदी में गिरफ़्तार हुआ कि ऐसी निय्यत क्योंकि अगर कोई निय्यत फ़र्ज़ या वाजिब हाज़िर न थी तो अकुल दर्जा निय्यते मुबाह़ पर क़ादिर था इस की नज़ीर नमाज़ है कि दिखावे को पढ़ी जाए अगरचे नमाज़ फ़ी नफ़सिही फ़र्ज़ ही मगर निय्यते ख़बीसा मूजिबे तहरीम होगी और सूरते अक्स में यानी जब सबब जानिबे नही हुआ और गर्ज़ जानिब तलब। अगर वो सबब मुतय्यन न था बल्कि उस का गैर कि नही से ख़ाली हो मुमकिन था तो इस सूरत में भी कसब मुतलक़न मोरिदे नही होगा कि गर्ज़ अगरचे फ़र्ज़ है जब ज़रिअए मुबाह़ से मिल सकती थी तो हराम या मकरूह की तरफ़ जाना अपने इख़्तियार से हो और उस का इलज़ाम लाज़िम आया और अगर सबब मुतय्यन था कि दूसरा तरीक़ा कुरदत ही में नहीं तो अब दो सूरतें होंगी अव्वल गर्ज़ व सबब की नही व तलब दोनों एक ही मर्तबा में हो मसलन सबब हराम गर्ज़ फ़र्ज़ सबब मकरूहे तहरीमी गर्ज़ वाजिब सबब में असाअ्ते गर्ज़ सुन्नत सबब मकरूहे तन्ज़ीही गर्ज़ मुस्तहब और सिर्फ़ इसी क़दर काफ़ी नहीं बल्कि नौअे वाहिद में तफ़ावत–ो कुव्वत पर भी नज़र लाज़िम कि हराम का तर्क फ़र्ज़ है और फ़र्ज़ का तर्क हराम और बअ्ज़ फ़र्ज़ बअ्ज़ दीगर से अअ्ज़म–ो

आकद होते हैं और बअ़ज़ ह़राम बअ़ज़ दीगर से अश्नअ–ो अशद तो ये देखा जाएगा कि मसलन फर्ज़ ग़र्ज़ के तर्क से जो हुर्मत लाज़िम आएगी वो उस हुर्मत से क्या निस्बत रखती है जो इस सबबे ह़राम के इर्तिकाब में है जब सब वुजूह से तरफ़ैन में तसावी–ए–कूव्वत साबित हो तो हुक्मे कसब में इत्तेबाअे सबब यानी जानिब नही को तर्जीह़ रहेगी :–

لان اعتناء الشرع بالمنہیات اشد من اعتنائہ بالمامورات ولہذا قال صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم اذا امرتکم بشئ فأتوا منہ ما استطعتم واذا نہیتکم عن شیٔ فاجتنبوہ وروی فی الکشف حدیثا لترک ذرۃ مما نہی اللہ عنہ افضل عن عبادۃ الثقلین قالہ فی الاشباہ ولنا فی المقام تحقیقات نفائس المنا بکثیر منہا فی ما علقنا علی کتاب اذاقۃ الاثام لمانعی عمل المولد والقیام من تصانیف خاتمۃ المحققین الاماجد سیدنا الوالد قدس سرہ الماجد۔

दोनों की कूव्वत कम–ो बेश हो इस सूरत में अक़वा का इत्तेबाअ होगा सबब हो ख़्वाह ग़र्ज़। मसलन माले ग़ैर बे इज़्ने ग़ैर लेना ह़राम है और ख़ूक–ो ख़मर की हुर्मत उस से भी ज़ाएद और सिदरमक़ व दफ़अे जूअ क़ातिल व अ़तश मुहलिक की फ़र्ज़ियत इन सब से अक़वा है लिहाज़ा ह़ालते मख़मसा में इन अशीया का तनावुल उसी क़दर जिस से हिलाक दफ़अ हो लाज़िम हुआ और जानिब ग़र्ज़ को तर्जीह़ दी गई और अगर मुज़्तर कुछ नहीं पाता मगर ये कि किसी इन्सान का हाथ काट कर खाए तो ह़लाल नहीं अगरचे उस शख़्स ने इजाज़त भी दी हो कि हुर्मते इन्सान इस फ़र्ज़ से अक़वा है लिहाज़ा जानिब सबब को तर्जीह़ रही :–

فی الدر الاکل للغذاء والشرب للعطش ولو من حرام او میتۃ او مال غیرہ وان ضمنہ فرض یثاب علیہ بحکم الحدیث ولکن

مقدار يدفع الانسان الهلاك عن نفسه اهـ و فى الشامية عن وجيز الكردرى ان قال له آخر اقطع يدى اكلها لا يحل لان لحم الانسان لا يباح فى الاضطرار لكرامته۔

ये तक़रीरे मुन्सिर हिफ़्ज़ रखने की है कि अव्वल ता आखिर इस तह़क़ीके जमील व ज़ब्ते जलील के साथ इस तह़रीर के ग़ैर में न मिलेगी व बिल्लाहित–तौफ़ीक़ इन्हीं ज़वाबित से दूसरे सवाले अअ़ती मस्अ़लए सवाल का हुक्म मुन्कशिफ़ हो सकता है जब ग़र्ज़ ज़रूरी न हो तो सवाल ह़राम मसलन आज का खाने को मौजूद है तो कल के लिए सवाल ह़लाल नहीं कि कल तक की ज़िन्दगी भी मालूम नहीं खाने की ज़रूरत दरकिनार। यूही रुसूमे शादी के लिए सवाल ह़राम कि निकाह़ शरअ़ में ईजाब–ो क़बूल का नाम है जिस के लिए एक पैसा की भी ज़रूरत शरअ़न नहीं और अगर ग़र्ज़ ज़रूरी हो और बे सवाल किसी तरीक़ए ह़लाल से दफ़अ़ हो सकती है जब भी सवाल ह़राम मसलन खाने को कुछ पास नहीं मगर हाथ में हुनर है या आदमी क़वी तन्दरुस्त क़ाबिले मज़दूरी है कि अपनी सनअ़त या उजरत से बक़दरे ह़ाजत पैदा कर सकता है क़ब्ल इस के कि एहतियाज ता ब–ह़द्दे मख़मसा पहुँचे तो उसे सवाल ह़लाल नहीं न उसे देना जाएज़ कि ऐसों को देना उन्हें कसबे ह़राम का मोयद होता है अगर कोई न दे तो झक मार कर आप ही मेह़नत मज़दूरी करें और अगर दूसरा तरीक़ए ह़लाल मुयस्सर नहीं हर्फ़त–ो सनअ़त कुछ नहीं जानता न मेह़नत–ो मज़दूरी पर क़ादिर है ख़्वाह ब–वजहे मर्ज़ या ज़ोअ़्फ़े खलक़ी या नाज़ परवरदगी या कसब कर तो सकता है मगर ह़ाजत फ़ौरी है कसब पर मह़ूल करना ता तिरयाक़ अज़ इराक़ का मज़मून हुआ जाता है तो सवाल ह़लाल होगा कि हर इन सूरतों में कारवाई यूँ ही हो सकती है कि मांग कर ले या छीन या चुरा कर या कोई ह़राम या मुरदार खाए और

सुरक़ा ग़ज़ब की हुर्मत सवाल से अशद है और हराम व मुरदार की ग़ज़ब–ो क़हर से भी सख़्त तर ये सूरतें तो ज़ाहिर हैं और ओलमा ने ब–वजहे इश्तेग़ाले जिहाद व मशग़ूली–ए–तलबे ईल्मे दीं फ़ुर्सत कसब न पाने को भी वुजूहे मअ़ज़ूरी से शुमार फ़रमाया और ऐसे के लिए सवाल ह़लाल बताया जब मदारे ज़रूरत ग़र्ज़–ो तअय्युन ज़रिआ पर ठहरा तो कुछ अकल–ो शरब ही की तख़्सीस नहीं कि पास एक दिन का क़ूव्वत है उसे सवाल मुतलक़न मनअ़ हो बल्कि अगर दस दिन का खाना मौजूद है और कपड़ा नहीं या कपड़ा भी है मगर हलका कि जाड़े की आफ़त रोक सकता नहीं और तरीक़ए तहसील कोई दूसरा नहीं कपड़े के लिए सवाल ना रवा नहीं। यूँ ही अगर खाने पहनने सब को मौजूद है मगर मदयून है तो अगर कुछ माले फ़ाज़िल रखा है जिस बेच कर अदा करे या कमा कर दे सकता है तो सवाल ह़राम और अगर कमाई से बाद नफ़्क़ए ज़रूरी के कुछ नहीं बचा सकता और क़र्ज़ ख़्वाह गर्दन पर छुरी रखे हुए है तो अदा के लिए सवाल ह़लाल। فی الدر المختار لایحل ان یسأل شیأ من القوت من له قوت یومه بالفعل او بالقوة کالصحیح المکتسب ویاثم معطیه ان علم بحاله لاعانته علی المحرم ولو سأل للکسوة اولاشتغاله عن الکسب بالجهاد او طلب العلم جاز لو محتاجا اھ وفیه من النفقات تجب ایضا لکل ذی رحم محرم صغیرا او انثٰی ولو بالغة صحیحة او الذکر بالغا عاجزا عن الکسب بنحو زمانة کعمی دعتہ وفالج زاد فی الملتقی والمختار اولا یحسن الکسب لخرقه اولکونه من ذوی البیوتات اھ قال الشامی ای من اهل الشرف الخ۔ واللہ سبحٰنہ وتعالٰی اعلم۔